जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 14 संख्याः 218 प्रभात चूरू, मंगलवार 6 दिसम्बर, 2022 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

राजस्थान के नये प्रभारी नियुक्त

जयपुर, 5 दिसम्बर (का.प्र.)। राजस्थान के प्रभारी अजय माकन की ओर से राजस्थान का प्रभार छोड़ने की इच्छा जताई जाने के बाद सोमवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने राजस्थान कांग्रेस का प्रभार सुखजिंदर सिंह रंधावा को सौंप दिया है।

इसी के साथ कुमारी सैलजा को चंडीगढ़ और शक्ति सिंह

- **कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने अजय माकन के स्थान पर अब सुखविन्दर सिंह रंधावा को राजस्थान का नया प्रभारी बनाया।**

गोहिल को हरियाणा का प्रभारी बनाया गया है।

रंधावा को कांग्रेस संचालन समिति का सदस्य भी बनाया गया है।

इन तीन राज्यों के प्रभारी बनाए जाने के अलावा गुरदीप सिंह सप्पल को पवन कुमार बंसल के साथ अटैच करते हुए एडमिनिस्ट्रेशन का अतिरिक्त प्रभार दिया है।

राजस्थान में भारत जोड़ो यात्रा के पहले दिन सुबह के सत्र में पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ओडीशा के प्रभारी भंवर जितेन्द्र सिंह, सांसद नीरज डांगी, राजेंद्र गुढ़ा, राजेंद्र यादव व गणेश घोघरा सहित अन्य नेता मौजूद रहे।

प्रेस कॉन्फ्रैंस के बाद गहलोत अस्वस्थ हुएः डॉक्टर बुलाए गए सर्किट हाउस चैकअप के लिए!

पदयात्रा के दोपहर के सत्र में भी राहुल गांधी के साथ केवल प्रतीकात्मक कुछ कदम चल कर, वापस लौटे

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 दिसम्बर। जब भारत जोड़ो यात्रा ने राजस्थान में प्रवेश किया और उसके बाद झालावाड़ से पद-यात्रा शुरू हुई, पूरे परिदृश्य पर सचिन पायलट छापे हुये थे।

भीड़ का आर-पार नहीं था, जोश हिलोरें ले रहा था तथा भीड़ को फासले पर रख पाना मुश्किल हो रहा था।

यह इलाका गुर्जर बहुल है, नौजवान सचिन पायलट के चित्र वाली टी शर्ट पहने हुये थे तथा उनके हाथों जो तख्तियाँ एवं बैनर थे, उन पर पायलट के चित्र दिखाई दे रहे थे।

जयराम रमेश के साथ सम्बोधित की गई प्रैस कॉन्फ्रेंस में तनावग्रस्त अशोक गहलोत अस्वस्थ हो गये। सर्किट हाउस में डॉक्टर बुलाना पड़ा तथा उनकी मेडिकल चैक अप किया गया।

वे अपरान्ह काल में यात्रा में आ गये। यात्रा में चन्द मिनट राहुल गांधी के साथ चले तथा उसके बाद अपनी कार में बैठकर चले गये क्योंकि वे

- **झालावाड़ में भारत जोड़ो यात्रा में माहौल सचिन पायलट मय रहा। युवाजन पायलट के फोटो वाली टीशर्ट, हाथ में झण्डा लिये, जोश के साथ चल रहे थे।**
- **उल्लेखनीय बात यह भी थी कि, झालावाड़ पोस्टरों से अटा हुआ था, पर, पोस्टरों में मु.मंत्री, डोटासरा और राहुल के फोटो थे, तथा सचिन की पोस्टर में अनुपस्थिति खल रही थी।**
- **मीडिया व पोस्टर निर्धारित करने के लिए आयोजित बैठक में, गहलोत ने कहा था कि, सोनिया, राहुल व खड़गे के फोटो प्रमुखता से तथा गहलोत व डोटासरा के नीचे होने चाहिये।**
- **पूछे जाने पर कि, प्रियंका का क्या होगा, गहलोत ने कहा, ''प्रियंका का राजस्थान से क्या लेना देना, उनका फोकस और ''कन्सर्न'' उत्तर प्रदेश से है।**

पैदल चल नहीं पा रहे थे।

और मजेदार बात यह थी कि पूरे झालावाड़ में लगे पोस्टरों तथा बैनरों पर केवल मुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष डोटासरा एवं राहुल गांधी के चित्र थे।

गहलोत के पोस्टरों में प्रियंका गांधी को दर्शाता हुआ कोई पोस्टर नहीं था।

रोचक बात यह थी कि पायलट के पोस्टरों में राहुल तथा प्रियंका गांधी दोनों के ही चित्र थे।

सूत्रों का कहना है कि मीडिया एवं प्रचार के बारे चर्चा करने के लिये पूर्व में हो चुकी मीटिंग में गहलोत ने कहा था कि पोस्टरों पर सोनिया, राहुल, खड़गे तथा बिल्कूल नीचे गहलोत और डोटासरा के फोटो होने चाहिये।

जब मीटिंग में एक सदस्य ने प्रियंका गांधी के फोटो के बारे में जानना चाहा, तो अशोक गहलोत का जवाब था: प्रियंका का राजस्थान से कोई लेना-देना नहीं है। उनका ध्यान तथा सम्बन्ध केवल उत्तर प्रदेश से है।

साफ बात यह है कि जिस तरह से प्रियंका गांधी अशोक गहलोत को हटाने तथा सचिन पायलट को स्थापित किये जाने पर जोर दे रही हैं, उससे गहलोत बुरा तरह खीजे हुये हैं।

रघुबीर मीणा अचानक बीमार हो गये तथ आज सुबह यात्रा के दौरान उन्हें ऐम्बुलैंस में ले जाना पड़ा।

दिलचस्प बाज यह रही कि यात्रा के सुबह के सत्र में अशोक गहलोत मौजूद नहीं थे। वे अपरान्ह सत्र में साथ-साथ चल रहे थे, किन्तु गहलोत बहुत कम समय के लिये ही यात्रा में उपस्थित रहे।

समाजवादी सैक्युलर नीतीश कुमार अब हिन्दुवादी हुए!

उनकी पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने केन्द्रीय सरकार से मांग की कि, अयोध्या के राम मंदिर की भांति सीतामढ़ी (बिहार) में भी एक उतना ही भव्य सीता मंदिर बनवाये

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 दिसम्बर। बिहार की राजनीति में असामान्य बदलाव आते दिखाई दे रहे हैं। सत्तारुढ़ गठबंधन पार्टनर जद (यू) तथा राजद धार्मिक मोड़ लेते दिखाई दे रहे हैं। पिछले माह के अंतिम दिनों में, वरिष्ठ जद (यू) नेता तथा राज्य के बिजली मंत्री बिजेन्द्र प्रसाद यादव ने केन्द्र से अपील की कि सीतामढ़ी में सीता-मंदिर का निर्माण कराया, जो भव्यता एवं शिल्प में अयोध्या में बनाये जा रहे भगवान राम के मंदिर के समान हो। स्वयं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ''गंगा जल आपूर्ति योजना'' नाम से एक स्कीम लॉन्च की है। इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट के अन्तर्गत, गंगा का पानी पाइपलाइन के जरिये 151 किमी की दूरी पर स्थित राजगिर, गया तथा नवादा नगरों तक पहुँचाया जायेगा। इस स्कीम के लॉन्चिंग समारोह में, कुछ जद (यू) नेताओं ने

- **नीतीश ने 151 किलोमीटर पाइप लाइन डालकर सरयू नदी को, सूखा रहने के सीता के श्राप से मुक्ति दिलाने का भागीरथी काम हाथ में लिया है।**
- **साथ ही नालंदा में ''जरासंध के अखाड़े'' को विकसित न करने में ढील-ढाल करने का आरोप लगाया।**
- **किंवदन्तियों के अनुसार इस अखाड़े में भीम ने जरासंध को मारा था।**
- **क्या नीतीश का धार्मिक टर्न लेने का कारण यह है कि, मोकामा व गोपालगंज में हुए उपचुनाव में भाजपा ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। नीतीश को चिन्ता है कि, उनका पुराना वफादार कुर्मी, कोरी व अन्य ई.बी.सी. वोट बैंक भाजपा की ओर खिसक रहा है।**

मुख्यमंत्री की तुलना भगीरथ से की, पौराणिक आख्यानों के अनुसार, वे गंगा को पृथ्वी पर लाये थे। दिलचस्प बात यह रही कि उपमुख्यमंत्री तथा राजद नेता तेजस्वी यादव ने भी ''सरयू नदी को सीता के शाप से मुक्त करने'' के लिये मुख्यमंत्री को बधाई दी। धर्मग्रंथ बताते हैं कि सरयू नदी, जो अयोध्या नगरी के समीप बहती है, में, सीता के शाप के कारण अनेक वर्षों तक पानी नहीं रहा था। तेजस्वी ने कहा, ''अब गंगा का पानी पूरे वर्ष उपलब्ध रहेगा।'' अभी हाल ही में, स्वयं मुख्यमंत्री ने भाजपा को उस समय अपना बचाव करने के लिये मजबूर कर दिया था, जब उन्होंने आरोप लगाया था कि आर्किओलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, जो केन्द्र सरकार की एजेंसी है, ने राज्य सरकार के उस प्रस्ताव की उपेक्षा कर दी थी, जो नालन्दा में ''जरासंध का अखाड़ा'' में विकास कार्य कराने के लिये दिया गया था। पौराणिक आख्यानों के अनुसार, मगध, जो आज का नालन्दा है, के राजा जरासन्ध को भीम ने अखाड़े में मार डाला था।

धर्म एवं धार्मिक किंवदतियों का प्रयोग आज की राजनीति में आम हो गया है लेकिन कुमार, जब एन.डी.ए. में थे तब उन्हें अपनी धर्मनिरपेक्ष छवि बनाए रखने के लिए भारी जद्दोजहद करनी पड़ी। पूर्व में भी उन पर आरोप था कि वे गया के विष्णुपाद मंदिर में मुसलमान को ले गए थे और सीमांचल के मुस्लिम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारी दबाव, पर भारत का नाम नहीं लिया यू.एस. ने

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 दिसम्बर। अमेरिका की ओर से यह जानकारी दी गई है कि पाकिस्तान, रूस, चीन, ईरान और आठ अन्य देश उसके कम भरोसेमंद साझीदार हैं क्योंकि इन देशों का अपने

- **अमेरिका ने पाकिस्तान, चीन, इरान व आठ अन्य देशों को स्वतंत्रता हनन करने के लिए दोषी राष्ट्रों की लिस्ट में रखा, पर भारी दबाव के बाद भी भारत को इस लिस्ट से बाहर रखा गया है।**

नागरिकों की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने का ट्रैक रिकॉर्ड ठीक नहीं है।

भारत को भी इस लिस्ट में शामिल करवाने के लिए इण्डियन अमेरिकन मुस्लिम काउन्सिल (आई.ए.एम.सी.) की भारी लॉबिंग और यू.एस. कमीशन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'चीन सौ पुलिस स्टेशन चला रहा है, विश्व के कई देशों में'

सी.एन.एन. न्यूज चैनल ने इन ''पुलिस स्टेशनों'' के बारे में छानबीन कर तैयार की गई अपनी रिपोर्ट में बताया

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 दिसम्बर। एक लम्बे अर्से से अमेरिका को दुनिया के एक स्व-घोषित पुलिसमैन के रूप में देखा जा रहा है। जाहिर तौर पर यह लेबल उसने विश्वभर में लोकतंत्र के संरक्षण और प्रोत्साहन के लिए एक सुपर पावर के हस्तक्षेप करने वाले तरीकों को लेकर शामिल किया है। लेकिन चीन ने भी हार ना मानते हुए अपने गुट के देशों को एकजुट रखकर और अन्य देशों की गुप्तचरी कर खुली चुनौती पेश की है।

सी.एन.एन. के साथ साझा सेफगार्ड डिफैण्डर्स की एक नई रिपोर्ट में आरोप लगाया गया है कि बीजिंग ने निर्वासन में रह रहे चीन के नागरिकों की निगरानी करने, उन्हें पेरशान करने और कुछ मामलों में उन्हें पुनः स्वदेश लाने के लिए विदेशों में सौ से अधिक तथाकथित पुलिस स्टेशन खोले हुए हैं।

- **चीन के विदेश मंत्रालय का इस बारे में कहना है कि, विदेशों में ये ''दफ्तर'' प्रवासी चीनी नागरिकों की सुविधा के लिये खोले गये हैं तथा, प्रवासी चीनी नागरिकों को वीज़ा, ड्राइविंग लॉइसैंस आदि कागजात दिलवाना ही काम है इन दफ्तरों का। कोविड की महामारी के दौरान ये ''दफ्तर'' खोले गये थे।**
- **पर सी.एन.एन. का दावा है, कोविड के बहुत पहले ये पुलिस स्टेशन खोले गये थे, तथा कार्यरत थे।**

इस काम के लिए द्विपक्षीय सुरक्षा समझौतों को भुनाया गया है। चीन ने ये समझौते अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक यथास्थिति दर्ज करवाने को लेकर यूरोप और अफ्रीकी देशों के साथ कर रखे हैं।

मैड्रिड के मानवाधिकार प्रचारक ग्रुप सेफगार्ड डिफैण्डर्स कहता है कि उसे यह प्रमाण मिले हैं कि चीन विदेशों में 48 अतिरिक्त पुलिस स्टेशनों का संचालन और कर रहा है। ग्रुप ने गत सितम्बर माह में ऐसे 54 स्टेशनों का ही अस्तित्व बताया था।

ग्रुप का नया संस्करण, जिसे ''पैट्रोल एण्ड पर्सूएड'' नाम दिया है, चीन के नैटवर्क की व्यापकता पर केन्द्रित है, और उस भूमिका का परीक्षण करता है जिसके तहत इटली, क्रोएशिया, सर्बिया और रोमानिया सहित कई यूरोपीय देशों और चीन के बीच हुई

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ताजमहल पर एतिहासिक तथ्य

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 दिसम्बर। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को एक जनहित याचिका खारिज कर दी जिसमे मांग की गई थी कि आर्किऑलजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (ए.एस.आई.) से कहा जाए कि

- **सुप्रीम कोर्ट ने ताजमहल के बारे में गलत जानकारी को इतिहास से हटाने की मांग करने वाली याचिका खारिज कर दी और कहा, कोर्ट कैसे तय कर सकता है कि, एतिहासिक तथ्य सही हैं या गलत।**

ताज कहते की सही आयू निर्धारित की जाए और इतिहास की किताबों में इसके बारे में दर्ज झूठे तथ्य हटाए जाए।

जस्टिस एम.आर.शाह और सी.टी. रविकुमार की बैंच ने कहा, ''यह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राहुल की यात्रा के राजस्थान चरण में कांग्रेस के नेता जुड़ते से दिखे और भाजपा के बिखरते से!

-सुजीत चक्रबर्ती-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 दिसम्बर। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि राहुल गांधी के नेतृत्व में हो रही भारत जोड़ो यात्रा के कल शाम राजस्थान में आगमन राज्य की राजनीति के विरोधी सिरों पर अलग-अलग प्रमाण डाला है। जहाँ इस यात्रा के आगमन से गुटों में बँटी सत्तारूढ़ कांग्रेस का एक जुट रूप में सामने आई है, वही इससे विपक्षी भारतीय जनता पार्टी की अन्दरूनी लड़ाई और गहरी हो गई है।

कांग्रेस के दो नेता, जिनके हाथ महीनों, बल्कि सालों एक दूसरे के गले तक पहुँच रहे थे, झलावाड़ में उस समय एक मंच पर एक-दूसरे के हाथ पकड़े हुये नाच रहे थे, जब भारत जोड़ों यात्रा के नेता राहुल गांधी ने 5 दिसम्बर की सुबह राजस्थान में प्रवेश किया।

बहुत जोर-शोर से प्रचारित-प्रसारित तथा एक से अधिक बार स्थगित की जा चुकी राज्य भाजपा की ''जन आक्रोश यात्रा'' जिसका शुभारम्भ आखिरकार 1 दिसम्बर को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा कर ही दिया, ने तो निराश ही किया, क्योंकि एकत्रित भीड़ जहाँ परिमाण में बहुत कम थी, वहीं उपस्थित लोग प्रतिक्रियाविहीन, उदासीन एवं भावशून्य नजर आये।

भाजपा के सैनिकों की ''अनुशासित'' सेना के सभी प्रान्तीय नेता ''राहुल को चुनौती देने'' की बात को अनदेखा करके एक दूसरे का गला पकड़ने पर आमादा दिखाई दे रहे थे।

राहुल का राजस्थान-प्रवेश झालावाड़ से हुआ, जो राज्य की पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे का चुनाव क्षेत्र है तथा जहाँ वे 14 बार चुनाव जीत चुकी हैं तथा उनके बेटे चार बार लोक सभा चुनावों में विजयी रहे हैं।

अब जरा भाजपा के मोर्चे पर घटित

- **पायलट व गहलोत का आदिवासियों की धुनों पर हाथ पकड़ कर नाचना, चाहे केवल एक ''फोटो ऑप'' ही हो, पर, भाजपा की आक्रोश रैली की लाँचिंग पर, कम उपस्थिति होना व बार-बार पोस्टरों में तबदीली कर, दोबारा-तिबारा छपवाने से प्रदेश के नेताओं की दूरी व प्रतिस्पर्धा खुलकर सामने आयी।**
- **वसुंधरा राजे को मंच पर स्थान मिला, तथा फाइनल हुए पोस्टर में उनकी फोटो भी दिखी। पर, आक्रोश यात्रा के लिए गठित 31 नेताओं की स्टियरिंग कमेटी में उनका व उनके समर्थकों का नाम नहीं होना, भी सबूत है कि, वे पार्टी के केन्द्रीय हाई कमान व प्रदेश के नेतृत्व की विश्वसनीय ''पसन्द'' नहीं हैं।**
- **जन आक्रोश रैली के लाँचिंग समारोह में भाजपा के स्थानीय नेताओं की अरुचि भी काफी चर्चा का विषय रही।**

कुछ उल्लेखनीय घटनाओं को स्मरण करें। भाजपा ने काफी पहले, मई में यह घोषणा की थी कि वह कांग्रेस की अशोक गहलोत सरकार के भ्रष्टाचार तथा आदिवासी तथा आदिवासी-विरोधी गलत कारनामों को उजागर करेगी। वह राजस्थान जन आक्रोश यात्रा जून में शुरू होने की थी। लेकिन उस समय शुरू नहीं हुई।

ऐसा लगता है कि या तो भाजपा के साथ ''जन'' नहीं हैं या फिर वह ''जन''-आक्रोश को पैदा करने में बुरी तरह असफल रही है या फिर भगवा पार्टी द्वारा की गई सभी सम्बन्धित घोषणा जबरदस्त गुटबन्दी की स्थिति को घुँधला कर देना साधन मात्र थी।

लेकिन जैसा कि सामने आया है, ये तीनों ही बातें सत्य थी, लेकिन इनमें सबसे ज्यादा दमदार एवं सच्चा कारण था- भाजपा की अन्दरूनी फूट। और सारे समाचार पत्र इसके साक्षी हैं।

यद्यपि जे.पी.नड्डा ने नाराज चल रही वसुन्धरा राजे का मंच पर भाव प्रवण स्वागत किया, लेकिन अन्दरूनी दरार एवं गुटबंदी पूरी तरह स्पष्ट एवं जाहिर थी। एक रिपोर्ट के अनुसार उनका नाम उस सूची में नदारद है, जिसमें राज्य में भाजपा के इस सबसे बड़े प्रचार अभियान के लिये राज्य पार्टी के प्रमुख नेताओं के नाम शामिल हैं।

अखबार की रिपोर्ट कहती है कि जन आक्रोश रैली के नेतृत्व के लिये 31 प्रमुख नेताओं की स्टीअरिंग कमेटी बनाई गई है, लेकिन उस सूची में न तो वसुन्धरा का नाम है, न उनके बेटे का। यहाँ तक कि उस सूची में उनके किसी कट्टर समर्थक का नाम तक नहीं है।

यह शुत्रता इस स्तर तक पहुँच गई है कि पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व को इस रैली के छपे सारे पोस्टर वापस लेने पड़े।

मूल पोस्टर्स में हमेशा की तरह एक छत्र नेता नरेन्द्र मोदी का ही फोटो था।

पर इन पोस्टर्स वापस लेना पड़ा। मोदी का भाजपा में यह असाधारण घटना थी। फिर नए पोस्टर्स छपवाए गए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'न्यायपालिका की स्वतंत्रता खतरे में है'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 दिसम्बर। सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व जज मदन बी. लोकुर ने एक समाचार एजेंसी (आई.ए.एन.एस.) ने कार्यपालिका के विरूद्ध सचेत करते हुये कहा है कि कार्य पालिका (सरकार) जिस तरह का व्यवहार कोलीजियम की सिफारिशों के साथ कर रही है, उससे यह साफ जाहिर है कि

- **सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश मदन बी. लोकुर ने एक इंटरव्यू में चेतावनी दी।**

जजों की नियुक्तियों को पूरी तरह अपने नियन्त्रण में लेने की कोशिश कर रही है और अगर सरकार इसमें सफल हो जाती है तो भारत में स्वतन्त्र न्यायपालिका अस्तित्व में नहीं रहेगी।

उन्होंने कहा कि किसी को नही मालूम कि वरिष्ठ एडवोकेट सौरभ किरपाल, जो समलैंगिक हैं, को दिल्ली